NEED TO LIBERATE THE BUDHMA-HAV1HAR(BODH GAYA FROM THE CLUTCHES OF BRAHMIN FUNDA-MENTALISTS

श्री आनन्द प्रकाश गौतम (उत्तर प्रदेश): आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, मानव कल्याण के लिए तथागत भगवान बुद्ध ने बौद्ध धर्म की स्थापना भारत की धरती पर की थी। यह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है और दुख का विषय है कि बौद्ध धर्म हिन्दू कट्टरवाद के कारण हमारे देश में कमजोर पड़ता गया और विश्व के अन्य देशों में इसका विस्तार होता जा रहा है । कई देशों में यह राजधर्म भी है । दुनियां के तमाम देशों में बौद्ध धर्म के मानने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है, क्योंकि बौद्ध धर्म में "सर्व धर्म सम्भाव" की मूलभूत अवधारणा निहित है । सौभाग्य से सम्पूर्ण संसार के बौद्ध लोगों का पवित्र स्थान, महाबोधि महाविहार हमारे देश में बिहार प्रान्त में बुद्ध गया में स्थित है, जो संसार के समस्त बौद्धों की अस्मिता तथा हमारे देश का गौरव है । दुनियां के बौद्ध देशों में भारत का सम्मान तथागत भगवान बुद्ध के देश के रूप में आज भी है । किन्तु यह अत्यन्त दुखद है कि संसार के बौद्धों का यह पूज्य स्थान जो हमारे देश में है, बुद्ध गया का महाविहार, जिस पर इस देश में बौद्ध धर्म के कमजोर पड़ने के साथ-साथ कट्टरपंथी ब्राह्मण परम्परावादी हिन्दुओं द्वारा उसके प्रबन्ध तंत्र पर कब्जा कर लिया गया था, वह आज भी उन्हीं के हाथों में है ।

भारत रत्न बाबा साहब डा० अम्बेडकर के समय से लुप्त प्राय: बौद्ध धर्म का भारत में फिर से उदय हो रहा है। इसके साथ ही बुद्ध गया के महाविहार का मुक्ति आंदोलन भी चल पड़ा और समय-समय पर इसके प्रयास चलते रहे । गत वर्ष भी 27 सितम्बर से 22 अक्तूबर, 92 तक बम्बई में चैत्य-भूमि से बुद्ध गया तक पांच हजार किलोमीटर की शांतिपूर्ण धम्मज्योत यात्रा सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई और 14 अक्तूबर, 92 को नई दिल्ली बोट क्लब पर बौद्धों ने महाबोधि महाविहार मुक्ति के लिए जोरदार शक्ति प्रदर्शन भी किया था । देश विदेश ने दूरदर्शन और समाचार पत्रों में इसका प्रचार हुआ और आज यह समस्या अंतर्राष्ट्रीय समस्या का रूप ले चुकी है । इसी के परिणामस्वरूप गत वर्ष नवम्बर में ताईवान में हुए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में बुद्ध गया के मसले पर जोरदार चर्चा हुई और यह प्रस्ताव पारित किया गया कि शांति दूत तथागत भगवान बुद्ध का यह पवित्र स्थान बौद्धों के हाथों में ही होना चाहिए । एक दिसम्बर से 8 दिसम्बर, 92 तक 250 बुद्ध भन्ते गणों ने बोट क्लब पर इस आशय से धरना दिया था कि भारत रत्न बाबा साहब डा० अम्बेडकर जिनके कारण हमारे देश में बौद्ध धर्म पुन: विकसित हो रहा है, उनके महा परिनिर्वाण दिवस 6 दिसम्बर तक उक्त महाविहार के मुक्ति का सार्थक प्रयास भारत सरकार द्वारा अवश्य किया जाएगा, क्योंकि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है और इसकी दृष्टि में सभी धर्मों के प्रति समान आदर है, किन्तु ऐसा नहीं हुआ । यहां पर किसी हिन्दू देवी-देवता या किसी अन्य के जन्म स्थान होने का विवाद भी नहीं है, तो भी सरकार की उदासीनता से ऐसा लगता है कि समय रहते यदि इसे मुक्त नहीं कराया गया तो आगामी मई माह में बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर जब भारत के कोने-कोने से बुद्ध गया में बौद्ध लोग एकत्र होंगे तो भावावेश में अयोध्या जैसी सम्भाव्य घटना से इंकार नहीं किया जा सकता है । वैसे तो बौद्ध लोग शांतिप्रिय होते हैं, सभी भगवान बुद्ध के आदर्शों पर चलने वाले हैं । लेकिन जब हद से गुजर जाती है मजबूरी तो अमन पसंद भी बगावत की बात करते हैं । इस मामले में अब तक दुनिया के 12 देशों का समर्थन और हमारे देश के तमाम अल्पसंख्यक संगठनों का भी समर्थन बौद्ध लोगों को मिल चुका है ।

उपसभाध्यक्ष महोदय, इस उल्लेख के माध्यम से मैं केन्द्र सरकार का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं और मांग करता हूं कि इस इन्सानियत की मांग और वक्त की पुकार पर समय रहते भारत रत्न बाबा साहब डा० अम्बेडकर के

दिन 14 अप्रैल तक सरकार तुरन्त इस मामले में हस्तक्षेप करके संसार के बौद्धों में पवित्र स्थान, बुद्ध गया के महाविहार को ब्राह्मण परम्परावादी हिन्दुओं के नियंत्रण से मुक्त कराकर बौद्धों को सौंपने का काम करे और धर्मनिरपेक्ष देश को सम्भाव्य धार्मिक संकट से बचाने का काम करे । यही मेरी मांग है ।

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं दो तथ्य कहुंगा । मैं अपने आपको सम्बद्ध करता हूं । संविधान की धारा 25 में बौद्ध, जैन, सिक्ख धर्म भी हिंदू धर्म से ही शासित होते हैं । हमारे देश के चारों तरफ जो हमारे पड़ौसी राज्य हैं वह बौद्ध राज्य हैं—श्रीलंका, बर्मा, जापान आदि । जापान हमको बहुत मदद दे रहा है बौद्धों के विकास के लिए । यहां की पहली सरकार ने बौद्धों को आरक्षण दिया है । वर्तमान सरकार ने बाबा साहब डा० अम्बेडकर के शताब्दी वर्ष में बहुत से कार्यक्रम घोषित किए हैं । देश की एकता और अखंडता के लिए और सर्वधर्म समभाव को दृष्टिगत रखते हुए यह आवश्यक है कि जो जिस धर्म के स्थान हैं, अगर उसी धर्म के अनुयायियों को उनका प्रबंध सौंप दिया जाए तो यह ज्यादा अच्छा होगा ।

चूंकि यह बौद्धों का सबसे ज्यादा पवित्र स्थान है और पूर्ण रूप से उसका इंतजाम बौद्धों के हाथ में नहीं है और हिंदू भाई गौतम बुद्ध को विष्णु का ही दसवां अवतार भी मानते हैं । इसलिए इन सब तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए भारत सरकार और उन हिन्दू लोगों को यह वाजिब है कि बोधगया का प्रबंध बौद्धों के हाथ में दे देना चाहिए ।

श्रीमती सत्या बहिन : (उत्तर प्रदेश) मैं अपने आपको श्री गौतम जी के विशेष उल्लेख से एसोसिएट करती हूं . . . **(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्री मोहम्मद सलीम): ठीक है, सत्या बहिन जी ऐसोसिएट करती और मौलाना भी ऐसोसिऐट कर रहे हैं ।

श्रीमती सत्या बहिन : उपसभाध्यक्ष जी, बोधगया बहुत पवित्र स्थान है बौद्धों का और उसको हिंदुओं के चंगुल से मुक्त कराया जाए । यह बहुत शर्म की बात है और चिंता की बात है । मान्यवर, मैं यह कहना चाहती हूं कि पिछले वर्ष हम महामहिम वर्तमान राष्ट्रपति जी के साथ विदेश गए थे तो वहां हम लोगों का स्वागत इस तरह किया गया था कि हम भगवान बुद्ध के देश से आए थे और उनमें हमारे भाई सुकोमल सेन जी और श्री सारंग जी भी साथ थे । तो मैं निवेदन करना चाहती हूं कि भारत में बौद्ध धर्म का प्रादुर्भाव हुआ था इसलिए बौद्धों के इस पवित्र स्थान को हिंदुओं के चंगुल से छुड़ाया जाए । मैं यह निवेदन करना चाहती हूं कि सरकार को इस पर गंभीरता से ध्यान देना चाहिए । यह भारत के लिए बड़े अपमान की बात है, केवल बौद्धों के लिए नहीं ।

उपसभाध्यक्ष (श्री मोहम्मद सलीम) : श्री राम नरेश यादव . . . **(व्यवधान)**

मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी :(उत्तर प्रदेश) : सर, एक मिनट ऐसोसिऐट करना चाहता हु,, प्लीज़ . . . **(व्यवधान)**

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: سر ایک منٹ

ایسوسی ایٹ کرنا چاہتا ہوں پلیز... مداخلت..

उपसभाध्यक्ष (श्री मोहम्मद सलीम) : आपके नाम से ऐसोसिऐट कर दिया है ।

मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी : सर, मैं गौतम साहब को ऐसोसिऐट करना चाहता हूं । बौद्ध धर्मस्थल जो हिंदुस्तान का बहुत मरकज़ी मकाम है, उस पर इस तरह से बेईमानी, धांधली करके कब्जा किया जा रहा है । उसको तोड़ा जा रहा है । कभी बाबरी मस्जिद पर बेईमानी, धांधली करके कब्जा किया जा रहा है । उसको तोड़ा जा रहा है । कभी बाबरी मस्जिद पर बेईमानी धाधली करक मंदिर बनाया जाए . . . **(व्यवधान)** कभी उसको तोड़ा जाए . . . **(व्यवधान)** पूरे मुल्क में अल्प-

† [] Transliteration in Arabic Script

[मौलाना ओवेदुल्ला खान अजमी]

संस्थाओं के तमाम धर्मस्थलों को तोड़कर अपनी-अपनी मरजी के ऐतबार से यह कारोबार हो रहा है, यह बेईमानी बंद होनी चाहिए ।

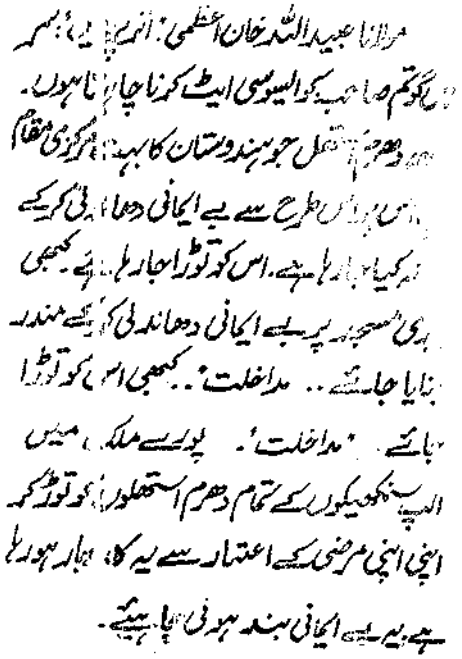

डा० जिनेन्द्र कुमार जैन : (मध्य प्रदेश) : हर चीज में बाबरी मस्जिद, हर चीज में बी०जे०पी० ।

मौलाना ओवेदुल्ला खान आजमी : मैंने बी०जे०पी० का नाम तो नहीं लिया . . . (व्यवधान)

श्री राम नरेश यादव (उत्तर प्रदेश) : महोदया, माननीय गौतम जी ने जिस प्रश्न को उठाया है, मैं उससे अपने को सम्बद्ध करता हूं और चाहता हूं कि सरकार इस पर गंभीरता से ध्यान दे ।

---

† [ ] Transliteration in Arabic Script-,

DROUGHT CONDITIONS IN SOME PARTS OF UTTAR PRADESH

श्री राम नरेश यादव : (उत्तर प्रदेश) : महोदय, मैं एक गंभीर प्रश्न की ओर आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं । उत्तर प्रदेश के कुछ भाग, विशेष रूप से मिर्जापुर और सोनभद्र, ये दोनो जिले बहुत बुरी तरह सूखे से प्रभावित हैं । यहां तक स्थिति हो गई है कि अब भुखमरी की स्थिति वहां पर हो रही है । वर्षा हुई नहीं, खेती होने का सवाल नहीं है विशेष रूप से वह क्षेत्र ऐसा है जहां पर कि हमारे आदिवासी रहते हैं । जंगलों में रहते हैं । पहले तो कभी-कभी वे गुठली और दूसरे जंगली फल-फूल खाकर अपनी जिंदगी बसर करते थे । आज वह चीज भी उनके सामने नहीं रह गई है ।

महोदय, इस सदन में कई बार दूसरे राज्यों में जहां पर भुखमरी से मौतें हुई हैं। उसकी चर्चा हुई है । इस समय वहां जो स्थिति पैदा हुई है वह बहुत ही भीषण है, खतरनाक है किंतु प्रदेश की सरकार का ध्यान भी उधर नहीं गया है । पिछली सरकार जो थी उसने कुछ भी काम शुरु नहीं किया था जिससे कि वह लोग अपनी कमाई करके रुपया बचा सकें और अपनी जीविका चला सकें ।

इसलिए मैं आपके माध्यम से चाहता हूं कि सरकार जल्दी से जल्दी उधर ध्यान दे और इस तरह से उसको ध्यान देना चाहिए कि एक तो मुफ्त राशन की व्यवस्था वहां पर कराई जानी चाहिए । दूसरी बात यह है कि बड़े पैमाने पर निर्माण के काम होने चाहिए क्योंकि अगर कुछ नहीं है तो लोग क्या करेंगे ? भुखमरी के शिकार होकर मरने लगेंगे उसी समय सरकार चेतेगी । इसलिए यह भी एक सवाल है और हमारा यह भी आपके माध्यम से आग्रह है कि केंद्रीय सरकार, प्रदेश सरकार को निर्देश दे कि वहां पर अधिकारी तुरंत जाएं और वहां पर युद्ध स्तर पर उनको राहत पहुंचाने के लिए जो भी संभव हो सके वह कदम उठाएं ताकि लोग भुखमरी के शिकार होने से बच सकें । यह इंसानियत का भी सवाल है मानवता का सवाल है । इ